OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 9

हरदुआगंज-उ.प्र.। शिव जयन्ती के अवसर पर आयोजित कलश यात्रा का शिवध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए डॉ. अरविंद कुमार,वी.सी. नोएडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी तथा अलीगढ़ से सांसद प्रत्याशी। साथ हैं ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. सत्यप्रकाश, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

राजनंदगांव-छ.ग.। 'नारी सुरक्षा के लिए आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए पद्मश्री फूलबासन यादव। साथ हैं विधायक तेज कुंवर नेताम, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य।

फलोदी-राज.। रामनवमी के अवसर पर शोभा यात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए नगरपालिका बिल्डिंग कमेटी के अध्यक्ष ओमप्रकाश बोहरा, पार्षद पन्नालाल,

माजलगाँव-महा.। महाशिवरात्रि पर्व का रहस्य बताते हुए ब्र.कु.प्रज्ञा। साथ हैं नितिन दादा नाईक नवरे, उपसभापति जयदत्त नरवडे तथा ब्र.कु. अनीता।

महुधा-गुज.। मामलतदार पंकज कुमार लोहाणा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. तृषा।

राजगामार-छ.ग.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् श्रीमती सुनीता सिंह,अधीक्षिका,कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय,सेन्ट्रीपाली, ब्र.कु. जितेश्वरी तथा स्कूल की छात्राएं।

गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र में...?

एक प्रश्न यह भी उठता है कि श्रीमद्भगवद्गीता हम सभी के पास आई कैसे? कहते हैं कि भगवान ने गीता का उपदेश कुरुक्षेत्र के मैदान में दिया था लेकिन यह ज्ञान हम तक कैसे पहुंचा? यदि इसका पूर्व अवलोकन किया जाये तो हम पायेंगे की जब वेद व्यास जी ध्यान मग्न स्थिति में बैठे थे तब उन्हें कुछ दिव्य साक्षात्कार हुए, जिसमें परमात्मा ने उन्हें बहुत सुन्दर रहस्यपूर्ण ज्ञान स्पष्ट किया। जब वो ध्यानमग्न स्थिति से वापस आए तो इस ज्ञान को उन्होंने लिपिबद्ध करना चाहा तब कुछ बातें भूलना स्वाभाविक ही था क्योंकि साक्षात्कार एक ऐसी चीज़ है जो सम्पूर्ण रीति से मनुष्य को याद नहीं रहती है। इसलिए कहा जाता है कि पहले दिन का ज्ञान उन्हें जो दिव्य अनुभव द्वारा प्राप्त हुआ था वो आज दिन तक कहीं भी लिखा हुआ नहीं है, जो कि धीरे-धीरे विलुप्त हो गया।

दूसरे दिन वेद व्यास जी को यह तो मालूम ही था कि साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त ज्ञान अधूरा है। इसलिए वे पुन: ध्यानमग्न स्थिति में बैठे। जैसे ही वे साक्षात्कार में गए तो जहाँ पर पहले दिन समाप्त हुआ था वहाँ से आगे ज्ञान मिलना प्रारंभ हुआ। इस बार वो कलम कागज लेकर बैठे थे कि आज मैं इसे लिख लूँगा। यह अमूल्य ज्ञान जो हमें प्राप्त हो रहा है इसे मानव तक पहुंचाऊंगा। परंतु दूसरे दिन के ज्ञान में भी वही बातें हुईं, जब वो लिखने जाते थे तो देखना रह जाता था, कभी-कभी देखने में इतना मग्न हो जाते थे कि लिखना ही रह जाता था। इसलिये दूसरे दिन का ज्ञान भी हम तक नहीं पहुंच पाया और वो भी लुप्त हो गया। तब कहा जाता है कि तीसरे दिन वेद व्यास जी ने भगवान से प्रार्थना की कि हे प्रभू! आप मुझे जो इतना अमूल्य ज्ञान दे रहे हैं, इस ज्ञान को मैं मनुष्य तक पहुंचा ही नहीं सका तो इसका फायदा क्या? कोई मुझे इसे लिखने वाला दो जिससे मैं इसको अन्य तक पहुंचा सकूं। तब कहा जाता है कि तीसरे दिन उन्हें श्रीगणेश जी प्राप्त हुए। गणेश जी लिखने के लिए तैयार हुए लेकिन गणेश जी ने एक शर्त रखी कि मैं तीव्रगति से लिखूंगा और जहाँ पर भी तुम रुके, वहाँ से मै उठकर चला जाऊँगा। वेद व्यास जी ने विचार किया कि मैं निरंतर साक्षात्कार की बातों का वर्णन करता रहूँगा और इस प्रकार यह सारा ज्ञान हम सभी के सम्मुख आ जाएगा। जैसे ही वे ध्यानमग्न होकर बैठे और साक्षात्कार में गए तो उन दृश्यों को देख उन्होंने हुबहू वर्णन करना प्रारम्भ किया। कहा जाता है कि तीसरे दिन की गीता रहस्यमय थी, उसमें कुछ दृश्य ऐसे भी थे, जहाँ उन्हें रुकना पड़ता था। अब स्थिति ऐसी थी कि उसको समझना भी पड़ता था। लेकिन स्मृति में यह बात स्पष्ट थी कि अगर मैं रुका तो गणेश जी उठकर चले जायेंगे। इसलिए जो चीज़ जैसी है, वैसी ही उसके स्वरुप में लिखा दिया जाए। इस तरह से उन्होंने जो दृश्य जैसे देखे वैसे ही लिखाना प्रारम्भ कर दिया। लेकिन कई स्थान पर कई अर्थ, गुह्य रहस्य के रूप में रह गए। इस तरह से श्रीमद्भगवद्गीता का जिन्होंने भी अनुवाद किया है, उन्होंने अपनी-अपनी बुद्धि से उसको समझने का प्रयत्न किया। इस तरह से कई प्रकार के अनुवाद हमारे सामने आते हैं।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

सामाजिक सशक्तिकरण पेज 1 का शेष...

सत्र में विज्ञान एवं इंजीनियरिंग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.मोहन सिंघल ने संस्था के इतिहास व उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। प्रितपाल सिंह पन्नु ने इस अवसर पर कहा कि सुरक्षा, सम्मान और समता संसार से लुप्त होती जा रही है। पूरी दुनिया में प्रकाश फैलाने के दावे किये जाते हैं लेकिन अभी तक आम आदमी की झोपड़ी में अंधेरा छाया हुआ है। इस स्थिति को बदलने में कलाकार महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अन्य वक्ताओं ने कहा कि इस बात का फैसला कलाकारों को करना है कि उनकी प्राथमिकता स्वर्णिम संसार का निर्माण करने में है या फिर विध्वंस फैलाने में है। कला का उद्देश्य मनोरंजन तक सीमित न होकर जीवन को संस्कार युक्त बनाना एवं सुख-शांति का प्रसार करना होना चाहिए।

ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि जीवन में व्याप्त विकारों पर विजय प्राप्त कर श्रेष्ठता हासिल की जा सकती है। कलाकार दैवीय संस्कृति के निर्माण में सहभागी बनें। उन्होंने स्पष्ट किया कि ब्रह्माकुमारी संस्था का उद्देश्य धर्म परिवर्तन नहीं बल्कि संस्कारों का परिवर्तन करना है।

ब्र.कु.मृत्युंजय ने कहा कि सकारात्मक लेखन व चिंतन से समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकती है। ब्र.कु. डॉ.निर्मला ने कहा कि धनोपार्जन से भौतिक सुख तो मिल सकते हैं लेकिन आत्मिक सुख व शांति की प्राप्ति नहीं होगी। मन की शांति ही अक्षुण्ण सम्पत्ति है जो विकट परिस्थितियों में भी हमारे काम आती है। ज्ञानसरोवर में पहली बार आये फिल्मी हस्तियों रेखा राव व संदीप गुप्ता ने कहा कि यहां पांव रखते ही यह अहसास हो गया कि इसी स्थान से पूरे विश्व में पावनता व शांति के संदेश प्रवाहित होते हैं। उन्होंने कहा कि अच्छे कर्म करने से परमात्मा की अनुभूति स्वयमेव होने लगती है। यदि कलाकार आध्यात्मिकता से जुड़ जायें और मेडिटेशन को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बना लें तो स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का जो लक्ष्य ब्रह्माकुमारीज़ ने निर्धारित किया है, उसकी प्राप्ति आसान हो जायेगी। स्वागत व उद्घाटन सत्र की शुरुआत मधुरवाणी ग्रुप के स्वागत गान तथा दिल्ली, पुणे व ओडिशा से आए कलाकारों के नृत्यों से हुई। आयोजकों की ओर से कला व संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.कुसुम, मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. दयाल व ब्र.कु. सतीश ने देश के विभिन्न प्रान्तों से आए कलाकारों के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि सुप्रसिद्ध गायिका एस.जानकी ने दर्शकों के आग्रह पर ''राम नाम रस पी ले मनवा...'' भजन गायन द्वारा वातावरण को भावविभोर कर दिया। वहीं दिनेश पटेल ने फिल्मी दुनिया के दिवंगत कलाकारों की स्मृति में एक मिनट का मौन धारण करवाने के बाद ''ऐ मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछुड़े चमन, तुझपे दिल कुर्बान...'' गीत गाकर अद्भुत माहौल पैदा किया।

गांधीनगर-गुज.। ज्ञानचर्चा करने के बाद डॉ. वरेश सिन्हा,मुख्य सचिव, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. तारा, ब्र.कु. कैलाश, ब्र.कु. हरिश,हेड क्वार्टर को-ऑर्डिनेटर,एडमिनिस्ट्रेटिव विंग व ब्र.कु. भरत।

नयमाथी-कर्नाटक। राजयोग शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए शांतना गौड़ा,एम.एल.ए.,होनाली, पंचायत सदस्य भारती बहन, सुराहोने ग्राम पंचायत अध्यक्ष यशोदा बहन, ब्र.कु.शिवमणि, ब्र.कु.वंदना तथा ब्र.कु.शोभा।